पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दो

पौलुस और कुलुस्सियों

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 5

I. परिचय (0:25) 5

II. पृष्ठभूमि (2:32) 5

- A. संबंध (3:58) 5
  - 1. कलीसिया (4:17) 5
  - 2. विशेष लोग (7:31) 6
- B. कुलुस्से में समस्याएं (10:17) 7
  - 1. यूनानी दर्शनशास्त्र (11:32) 7
  - 2. यहूदी व्यवस्था (16:11) 9
  - 3. आकाशीय आत्मिक प्राणी (20:22) 10

III. संरचना और विषय-वस्तु (31:57) 13

- A. अभिवादन (32:47) 13
- B. उत्साह (33:14) 13
- C. अंतिम अभिनंदन (34:04) 13
- D. मसीहियत की सर्वोच्चता (35:20) 14
  - 1. मसीह की सर्वोच्चता (36:17) 14
  - 2. मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता (48:20) 18
  - 3. मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता (56:44) 20
  - 4. मसीही जीवन की सर्वोच्चता (1:02:41) 21

IV. आधुनिक प्रयोग (1:10:18) 23

- A. मसीह के साथ वफादारी (1:11:04) 23
- B. आत्मिक केन्द्र (1:17:31) 25

V. उपसंहार (1:28:37) 26

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 27

उपयोग के प्रश्न 32

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
  - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
  - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
  - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
  - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
  - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
  - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
  - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- कुलुस्सियों की पत्री पढ़ें

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:25)

II. पृष्ठभूमि (2:32)

पौलुस के पत्र

- व्यक्तिगत और पासवानीय
- प्रेम और चिंता से प्रेरित
- विषय पर आधारित — विशेष समयों और स्थानों में विशेष विषयों को संबोधित करने के लिए

A. संबंध (3:58)

1. कलीसिया (4:17)

पौलुस ने शयद में कभी इस कलीसिया से भेंट नहीं की थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस का अपने इन प्रतिनिधियों, के माध्यम से कुलुस्सियों के साथ अप्रत्यक्ष संबंध था :

- इपफ्रास
- फिलेमोन
- उनेसिमुस
- तुखिकुस

पौलुस और कुलुस्सियों ने पत्राचार के द्वारा संबंध रखा था।

पौलुस और कुलुस्सियों ने एक-दूसरे के प्रति सेवकाई की थी।

2. विशेष लोग (7:31)

पौलुस के कुछ मित्र थे जिन्होंने उसके साथ सुसमाचार की सेवकाई में परिश्रम किया था :

- फिलेमोन
- अफफिया
- अरखिप्पुस

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- इपफ्रास — पौलुस का सहकर्मी और सहकैदी, मसीह का विश्वासयोग्य सेवक।

- उनेसिमुस — एक दास था जिसने फिलेमोन की संरक्षा से भागने के बाद पौलुस को खोजने का प्रयास किया और अंत में उसने कारागृह में पौलुस की सेवा की।

B. कुलुस्से में समस्याएं (10:17)

इपफ्रास ने पौलुस को कुछ झूठी शिक्षाओं के बारे में बताया जो लिकुस घाटी की कलीसियाओं, जिसमें कुलुस्से की कलीसिया भी शामिल थी, के लिए खतरा बन रहीं थीं। अत: इन झूठी शिक्षाओं से कलीसिया की सुरक्षा करने के लिए पौलुस ने कुलुस्सियों को पत्री लिखी।

1. यूनानी दर्शनशास्त्र (11:32)

“दर्शनशास्त्र” — इसका प्रयोग गुप्त धर्मों के लिए किया जाता था, विशेषकर उनके लिए जो धार्मिक परंपराओं पर निर्भर थे, जैसे कि

- रहस्य
- रस्में
- गुप्त ज्ञान
- गुप्त बुद्धि

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सच्चे रहस्य, बुद्धि और ज्ञान गैरमसीही धर्मों में नहीं परन्तु केवल मसीह में पाए जाते हैं।

कुलुस्से के झूठे शिक्षक यूनानी धर्म और गुप्त रहस्यवाद पर आधारित धारणाओं और क्रियाओं के जाल में फंस गए थे।

सन्यास — यह भौतिक आनन्द को अनुचित रूप से टालने की क्रिया है; इसकी बुनियाद प्राय: इस गलतफहमी में पाई जाती है कि आनन्द अनैतिक है, और यह कभी-कभी स्वयं को शारीरिक वेदना पहुंचाने का सुझाव देती है।

पौलुस ने कुलुस्से में सन्यासी क्रियाओं का विरोध किया :

- सन्यास क्रिया संसार के आधारभूत सिद्धांतों पर आधारित थी।

- पाप का विरोध करने में इसका कोई महत्व नहीं था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. यहूदी व्यवस्था (16:11)

कुलुस्से में, यहूदी व्यवस्था का उनका प्रयोग और समझ पारंपरिक यहूदी धर्म और उचित मसीही क्रियाओं से बहुत अलग व दूर थे।

झूठे शिक्षक यहूदी शिक्षाओं और क्रियाओं का प्रयोग गलत तरीकों से कर रहे थे।

उनकी क्रियाओं ने पुराने नियम की व्यवस्था को विकृत कर दिया एवं उनका अनुसरण करने वालों के अनन्त लक्ष्यों को खतरे में डाल दिया।

पौलुस ने मूसा की व्यवस्था के गलत प्रयोग के विरुद्ध लिखा; उसने व्यवस्था के विरुद्ध नहीं लिखा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. आकाशीय आत्मिक प्राणी (20:22)

झूठे शिक्षकों ने आकाशीय आत्मिक प्राणियों की आराधना को बढ़ावा दिया।

a. स्वर्गदूत

सेवा करने वाली आत्माएं — उनके कार्य को पहचानना महत्वपूर्ण है।

झूठे शिक्षकों के अनुसार स्वर्गदूत :

- आकाशीय शक्तियां थे
- ऐसी वाणियां थे जो उन लोगों के समक्ष रहस्मयी शिक्षाओं को प्रकट करेंगे :
  - जो उनके लिए रस्मीय क्रियाएं करेंगे
  - और उनकी आराधना करेंगे

प्राचीन जगत में स्वर्गदूतों की शक्ति और प्रभाव का अतिश्योक्तिपूर्ण दृष्टिकोण असामान्य नहीं था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. शासक और अधिकार

"शक्तियां" और "अधिकार" — स्वर्गदूतों के समान आकाशीय आत्मिक प्राणी।

पौलुस ने स्वर्ग और पृथ्वी पर पाई जाने वाली हर शक्ति और अधिकार पर मसीह की सर्वोच्चता पर बल दिया।

झूठे शिक्षकों ने इन अदृश्य शासकों को वे कार्य और योग्यताएं प्रदान कर दीं जो वास्तव में केवल मसीह के पास थीं।

उनमें वास्तविक अन्तर आत्मिक और सांसारिक होना नहीं, परन्तु मसीह का उनके ऊपर अधिकार रखना है।

ये पतित, शक्तिरहित, पराजित दुष्टात्माएं, आकाशीय आत्मिक शक्तियां थीं जिनकी आराधना कुलुस्से के झूठे शिक्षक करते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. आधारभूत सिद्धांत

यूनानी शब्द *स्टोखिया* — "आधारभूत सिद्धांत"

- देवताओं

- आकाशीय आत्मिक शक्तियां जो तारों और नक्षत्रों से जुड़ी होती हैं

- चार आधारभूत भौतिक तत्व :

    - पृथ्वी
    - हवा
    - आग
    - पानी

आधारभूत सिद्धांत झूठे शिक्षकों के दर्शनशास्त्र का आधार थे।

लगता है कि झूठे शिक्षकों ने इन्हें एक साथ मिला दिया था :

- यहूदी व्यवस्थावाद

- अन्यजाति के धर्मों

- मसीहियत

प्रतीत होता है कि झूठे शिक्षकों ने आधारभूत सिद्धांतों की आराधना करने को उत्साहित किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. संरचना और विषय-वस्तु (31:57)

A. अभिवादन (32:47)

प्रेरित पौलुस को इस पत्री के आधिकारिक लेखक के रूप में पहचानता है, और यह उल्लेख भी करता है कि यह पौलुस के चेले तीमुथियुस की ओर से भी है।

B. उत्साह (33:14)

आभार-प्रदर्शन और मध्यस्थता के उत्साह के बाद कुलुस्सियों की कलीसिया के विषय में वे विवरण आते हैं जो पौलुस इपफ्रास से प्राप्त करता है।

C. अंतिम अभिनंदन (34:04)

पौलुस ने अनेक लोगों की ओर से कुलुस्सियों को अभिनंदन भेजे जो कारागृह में उसके साथ थे।

कुलुस्सियों, इफिसियों और फिलेमोन लगभग एक ही समय में लिखे और भेजे गए थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने इन पत्रियों को विशेष लोगों को विशेष परिस्थितियों में लिखे, परन्तु वह चाहता था कि ये अलग-अलग लोगों पर भी लागू हों।

D. मसीहियत की सर्वोच्चता (35:20)

पत्री के मुख्य भाग में, यह भाग झूठे शिक्षकों के धर्म पर मसीहियत की सर्वोच्चता के विवरण प्रदान करता है।

1. मसीह की सर्वोच्चता (36:17)

मसीह अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप है।

a. परमेश्वर का स्वरूप, कुलुस्सियों 1:15

कुछ दर्शनशास्त्रों में ब्राह्मांड को ही परमेश्वर का स्वरूप समझा जाता था, परमेश्वर का सबसे बड़ा प्रकाशन।

पौलुस ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मसीह को दर्शाया। उसने “परमेश्वर के स्वरूप” शब्दसमूह के यूनानी दार्शनिक अर्थ को यह दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया कि मसीह परमेश्वर का स्थायी प्रकाशन है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. सारी सृष्टि के ऊपर पहलौठा, कुलुस्सियों 1:15

पौलुस ने उल्लेख किया कि मसीह सारी सृष्टि के ऊपर पहलौठा है।

यूनानी शब्द प्रोटोकोस, जिसका अनुवाद यहां “पहिलौठा” है, का प्रयोग प्राय: जन्म लेने के क्रम की अपेक्षा महानता और अधिकार को दर्शाने के लिए किया जाता है।

पौलुस ने मसीह के “पहिलौठे” होने के स्तर को पूरी सृष्टि के ऊपर उसके अधिकार और महानता के साथ जोड़ा, और ऐसे समय के विषय में कुछ नहीं कहा जब मसीह का अस्तित्व न हो।

झूठे शिक्षकों के झूठे देवताओं के पास किसी को किसी प्रकार की आशीष देने का कोई अधिकार नहीं है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

c. सृष्टि का दूत, कुलुस्सियों 1:16

मसीह सृष्टि का दूत है, वह जिसके माध्यम से परमेश्वर ने इस ब्राह्मांड की रचना की है।

मात्र मसीह ही सृष्टि का दूत है और ये दूसरी शक्तियां उससे निम्न और उसके अधीन में हैं।

सृष्टि के दूत के रूप में मसीह की प्रमुखता उसे सृष्टि की प्रत्येक वस्तु से महान् बनाती है।

d. महान् प्रभु, कुलुस्सियों 1:18

मसीह महान् प्रभु है क्योंकि परमेश्वर ने उसे कलीसिया के सिर के रूप में रखा है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कोई तन्त्र जो मसीह की अद्वितीय सर्वोच्चता का स्थान लेने या उसके योग्य ठहरने का प्रयास करता है वह अवश्य ही झूठा या गलत है।

e. देहधारी परमेश्वर, कुलुस्सियों 1:19

मसीह देहधारी परमेश्वर है।

f. एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाला, कुलुस्सियों 1:20

मसीह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाला है।

यीशु मसीह वह दूत है और माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर संसार से पाप को साफ कर रहा है और मनुष्यजाति के साथ मेल कर रहा है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. मसीह् के सेवकों की सर्वोच्चता (48:20)

a. मसीही सुसमाचार के द्वारा प्राप्त मेलमिलाप, कुलुस्सियों 1:21-23; 2:5

पौलुस और कुलुस्सियों ने सुसमाचार के द्वारा पहले से ही मेलमिलाप का अनुभव कर लिया था।

b. निस्वार्थता, कुलुस्सियों 1:24

पौलुस ने कलीसिया के कष्टों को सहा।

पौलुस के कष्टों ने इन बातों के द्वारा कलीसिया को आशीष प्रदान की:

- सुसमाचार के लिए एक शक्तिशाली गवाही प्रदान करने
- कलीसिया को उत्साहित करने
- मसीह् के कष्टों को पूरा करने

c. दैवीय/स्वर्गीय आदेश, कुलुस्सियों 1:25

प्रेरित के रूप में पौलुस की नियुक्ति स्वयं प्रभु ने की थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

झूठे शिक्षक उन विचारों पर निर्भर रहे जिनकी खोज मूर्तिपूजक लोगों ने की थी।

d. **प्रकाशन, कुलुस्सियों 1:25-28; 2:2-4**

पौलुस के द्वारा प्राप्त किया गया प्रकाशन उससे श्रेष्ठ था जिसका प्रमाण झूठे शिक्षकों ने दिया था।

पौलुस ने परमेश्वर की ओर से प्रकाशनों को प्राप्त करते हुए अरब के रेगिस्तान और दमिश्क में तीन वर्ष बिताए। (गलातियों 1:15-18).

e. **सामर्थ, कुलुस्सियों 1:29–2:1**

परमेश्वर अपने सेवकों को सामर्थ प्रदान करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्र आत्मा ने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए पौलुस को विस्मित कर देने वाले वरदान प्रदान किए :

- बोलने के लिए शब्द
- बोलने के अवसर
- अपनी गवाही की पुष्टि के लिए चमत्कार

3. मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता (56:44)

a. मसीह के साथ संयोजित जीवन, कुलुस्सियों 2:6-15

क्योंकि मसीह हमारा प्रभु है इसलिए :

- हम उसमें रोपे गए हैं, उस पर आधारित हैं और उसमें सामर्थ को प्राप्त करते हैं
- फलस्वरूप उसके प्रति असीम आभार महसूस करते है

हम में आत्मिक सामर्थ है क्योंकि हम मसीह के साथ जुड़े हुए हैं।

- मसीह की मृत्यु हमें क्षमा प्रदान करती है।
- मसीह के पुनरुत्थान और जीवन से हमारी आत्माओं को पुन: जीवन मिलता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हम व्यवस्था के कामों के द्वारा उद्धार अर्जित करने से हम मुक्त हो गए हैं।

b. **तत्व-ज्ञान के अधीन जीवन, कुलुस्सियों 2:16-23**

तत्व-ज्ञान के प्रति अधीनता :

- मनुष्य के निरंकुश प्रभुत्व में रख देता है।

- इसका परिणाम मसीह से अलग हो जाना होता है।

- केवल सन्यासवाद की ओर ही प्रेरित करता है।

मसीह में प्रदान किया जाने वाला उद्धार कुलुस्से के झूठे शिक्षकों द्वारा घोषित तथाकथित आशीषों से कहीं अधिक बेहतर था।

4. **मसीही जीवन की सर्वोच्चता (1:02:41)**

मसीही जीवनशैली झूठे शिक्षकों द्वारा सुझाई गई जीवनशैली से नैतिक रूप से बहुत अधिक बेहतर है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमें पृथ्वी की बातों से अधिक आत्मिक और स्वर्गीय बातों को अधिक महत्व देना चाहिए।

सन्यासवादियों ने :

- उन आदर्शों पर बल देने की परवाह नहीं की जो वास्तव में स्वर्गीय और आत्मिक थे।
- आत्मिक लक्ष्य तो रखे, परन्तु उनके सभी प्रयास पृथ्वी की बातों पर ही लगाए गए।

पौलुस ने उन विशेष मार्गों को सिखाया जिन पर विश्वासी केन्द्रित रह सकते हैं और उन कार्यों को करने का प्रयास कर सकते हैं जिनका आधार आत्मिक हो।

नैतिक जीवन की कुंजी यह है :

- हम मसीह से जुड़े हुए हैं।
- हमारे पास “नए मनुष्यत्व” या “नए स्वभाव” हैं।
- हम परमेश्वर द्वारा आंतरिक रूप ये नए होते जाते हैं।
- यह संयोजन और नवीनीकरण नैतिक रूप से जीने में हमारी सहायता करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने कुछ व्यावहारिक मार्गों का प्रस्ताव दिया जिनके द्वारा विश्वासी पाप पर विजय प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ पर आश्रित रह सकते हैं।

विश्वासी इनके द्वारा नैतिक जीवन जीने में सफल हो सकते हैं :

- उन पापों पर ध्यान न लगाने जिनसे बचने का हम प्रयास कर रहे हैं
- करूणा और दया जैसे स्वर्गीय, आत्मिक सद्गुणों पर बल देने

सन्यासी क्रियाओं के विपरीत जो पाप के विरुद्ध कोई महत्व नहीं रखती, पौलुस की विधी ने वास्तव में नैतिक जीवन को संभव बना दिया था।

IV. आधुनिक प्रयोग (1:10:18)

A. मसीह के साथ वफादारी (1:11:04)

पहली सदी के दौरान रोमी साम्राज्य में प्रबल धार्मिक विचार बहुईश्वरवादी थे :

- लोग मानते थे कि अनेक देवताओं का अस्तित्व है
- अनेक देवताओं की आराधना करते थे

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परन्तु मसीह केवल अपनी ही आराधना को चाहता है। यदि हम मसीह की आराधना करते हैं तो हम किसी और की आराधना नहीं कर सकते।

यदि हम मसीह के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहते तो हम उद्धार प्राप्त नहीं करते।

हमारा आधुनिक संसार हमारे समक्ष आराधना के लिए अलग-अलग देवताओं को प्रस्तुत करने के द्वारा मसीह के प्रति हमारी वफादारी को निरन्तर चुनौती देता है।

सभी दबाव कलीसिया के बाहर से ही नहीं आते।

हम मसीह के प्रति निष्ठाहीन होने का दबाव महसूस करते हैं। हमें इन झूठे विचारों से अलग रहकर केवल मसीह को स्वीकार करना है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. आत्मिक केन्द्र (1:17:31)

हमारा उद्धार हमारे सांसारिक प्रयासों पर निर्भर नहीं करता, परन्तु आत्मिक वास्तविकताओं पर निर्भर करता है :

- पुनर्स्थापित आत्माओं
- मसीह के साथ संयोजन

नया जन्म हमें नए लोग बना देता है। हम केवल क्षमा ही प्राप्त नहीं करते हैं; हम आत्मिक रूप से भी बदल जाते हैं।

हमारी आत्माओं को नया कर दिया गया है, अब हम आत्मिक लोग हैं। सबसे लाभदायक बात यह है कि हम आत्मिक जीवनों पर केन्द्रित रहें।

पापमय अभिलाषाओं को दबाने की ओर ध्यान लगाना पापमय अभिलाषाओं पर ही ध्यान लगाना है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हम सांसारिक बातों की ओर से ध्यान हटाकर आत्मिक बातों की ओर लगाएं। परन्तु आत्मिक” विषय संसार के साथ हमारी भागीदारी की मांग करते हैं।

स्वर्ग पर केन्द्रित होने का अर्थ है उस पर केन्द्रित होना जो स्वर्ग में चढ़ गया है, अर्थात् मसीह, ताकि जब हम पृथ्वी पर ही हैं तो उसके समान हो जाएं।

पौलुस के नैतिक निर्देश आत्मिक या स्वर्गीय विषयों से संबंधित हैं। परन्तु फिर भी इनका क्रियान्वयन वर्तमान संसार में सक्रिय सहभागिता के द्वारा ही किया जा सकता है।

V. उपसंहार (1:28:37)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ पौलुस के संबंध और कलीसिया के भीतर अलग-अलग लोगों के साथ पौलुस के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

2. उन समस्याओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए जो यूनानी दर्शनशास्त्र, यहूदी व्यवस्था और आत्मिक प्राणियों ने कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए उत्पन्न की थीं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. जब हम इस पत्र को लिखने के पौलुस के कारण को समझने का प्रयास करते हैं तो कुलुस्सियों की पृष्ठभूमि को समझना क्यों महत्वपूर्ण है?

4. पौलुस ने कुलुस्सियों के समक्ष किस प्रकार प्रस्तुत किया कि मसीह सर्वोच्च है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. मसीह के सेवक किस प्रकार कुलुस्से के झूठे शिक्षकों से सर्वोच्च थे?

6. मसीह का उद्धार उन योजनाओं से किस प्रकार श्रेष्ठ है जिनका प्रस्ताव कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने दिया था?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. किस प्रकार मसीही जीवनशैली नैतिकता के अन्य दृष्टिकोणों से श्रेष्ठ है?

8. कुलुस्सियों की संरचना और विषय-वस्तु का वर्णन कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना क्यों महत्वपूर्ण है?

10. आत्मिक केंद्र या ध्यान को रखना क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. झूठे शिक्षकों के नकारात्मक प्रभाव ने कुलुस्सियों के विश्वासियों के लिए सत्य को पहचानना मुश्किल कर दिया था। आपकी संस्कृति में ऐसे कौनसे प्रभाव हैं जो आपके लिए सत्य को पहचानना मुश्किल कर देते हैं? किस प्रकार मसीहियत की सर्वोच्चता पर पौलुस का ध्यान झूठी शिक्षा को दूर करने में हमारी रणनीति की अगुवाई कर सकता है?

2. मसीह सृष्टि का सर्वोच्च दूत है, यह ज्ञान किस प्रकार संसार की चुनौतियों और अवसरों के प्रति आपके दृष्टिकोण को ढाल सकता है?

3. मसीह ने परमेश्वर के साथ आपका मेल-मिलाप कैसे करवाया है? आपकी दुनिया और रिश्तों के कौनसे क्षेत्र बिलकुल बदल जाएंगे यदि मसीह का मेल-मिलाप का कार्य पूर्ण हो जाए?

4. पौलुस ने कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की। इस उदाहरण का अनुसरण करने के क्या लाभ हो सकते हैं?

5. किस प्रकार मसीह के साथ संयोजन मसीहियों को नैतिक रूप से जीने में सहायता करता है? सन्यासवादियों की नैतिक नीतियों से यह नीति अधिक प्रभावशाली क्यों है? किस प्रकार सन्यासवाद मसीही अनुशासनों के सही प्रयोग का विरोधाभासी है?

6. आपके जीवन के कौनसे क्षेत्रों में आप मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता में चुनौती प्राप्त करते हैं?

7. किस प्रकार नए जन्म का सत्य हमारे अपने और दूसरों के बारे में हमारे दृष्टिकोण को ढालता है? किस प्रकार नया जन्म हमें नए लोग बनाता है?

8. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org